Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 3 || February 2026 (Special Issue 1) || DOI: 10.5281/zenodo.18852028

साहित्य, समाज और मीडिया का अंतरसंबध: वर्तमान संदर्भ में

डॉ. हिरा पोटकुले[1]

साहित्य समाज रूपी शरीर की आत्मा है तो मीडिया उसकी आवाज। जनमासन को शिक्षित करने, जागरुक बनाने में साहित्य और मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य, समाज और मीडिया का गहरा संबंध है। साहित्य, समाज और मीडिया का यह संबंध निश्चित रूप से मानवी जीवन में सकारात्मक परिर्तन लाने की क्षमता रखता है। साहित्य ऐसा माध्यम है जिसमें किसी एक वर्ग, जाति-धर्म-समाज, समूह, संप्रदाय या प्रदेश के बजाय समस्त विश्व-समाज के कल्याण की भावना निहित है। साहित्य में समाज की खोज होती है जिसमें जीवन-जगत का बोध, यथार्थ की चेतना, चरित्रों का निर्माण, भावों- विचारों की व्यंजना के तरीकों को महत्व हैं। वास्तव में साहित्य का अविर्भाव समाज से ही होता है जिसे रचनाकार अपने विचार, भावों के साथ अपने शब्दों के माध्यम से एक आकार देता है। साहित्य और मीडिया समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करने का सशक्त माध्यम है। समाज के नवनिर्माण में साहित्य और मीडिया की केंद्रीय भूमिका स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

बीज शब्द: साहित्य, समाज, मीडिया, वर्तमान, सूचना प्रौद्योगिकी

उद्देश:

- साहित्य, समाजऔर मीडिया के अंतरसंबध का अध्ययन करना।
- वर्तमान संदर्भ में साहित्य और मीडिया की भूमिका को जनना।

लोकतांत्रिक देशों में न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका इन तीन स्तंभों के क्रियाकलापों पर नजर रखने के लिये चौथे स्तंभ के रूप में जिसे जाना जाता है, उस मीडिया का समाज जीवन पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है।18 वीं शताब्दी के बाद अनेक देशों में स्वतंत्रता आंदोलन, समाज में क्रांती लाना साथ ही समाज को जागरुक कर मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी भी व्यक्ति, समूह और देश को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से समृद्ध बनाने में साहित्य और मीडिया का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। लेकिन वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी में आई नई अवधारणा - अधिकतम मुद्रार्जन तक सीमित दिखाई देती है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों को नजर अंदाज करके मीडिया ने साहित्य के साथ अपनी सालों-साल पुरानी जुगलबंदी को दरकिनार कर अपने-आप को केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित कर लिया है। "साहित्य समाज का दर्पण है"। समाज के अच्छे और

[1] श्री शिवाजीराव पंडित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शिवाजीनगर गढी

Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 3 || February 2026 (Special Issue 1) || DOI: 10.5281/zenodo.18852028

बुरे दोनों पक्षों को मीडिया मुखर बनाता है। वर्तमान समय की बात करें तो मीडिया का हर तरफ बोल-बाला है जिसके नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पक्षों से समाज जीवन प्रभावित हो रहा है।

"उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी कहा जा सकता है। इस शताब्दी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज सुधार को भी संघर्ष का विषय बनाया। इस काल के साहित्य ने समाज जागरण के लिये कभी अपनी पुरातन संस्कृति को निष्ठा के साथ स्मरण किया है, तो कभी तात्कालिक स्थितियों पर गहराई के साथ चिंता भी अभिव्यक्त की। आठवें दशक के बाद से आज तक के काल का साहित्य जिसे वर्तमान साहित्य कहना अधिक उचित होगा, फिर से अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर समाज निर्माण की भूमिका को वरीयता के साथ पूरा करने में जुटा हैं ।"१

सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में ज्ञान, विज्ञान और तकनिकी के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों का ज्ञान को आसानी से प्राप्त करने का सशक्त माध्यम है, मीडिया। सोशल मीडिया के जैसे व्हाट्सअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर आदि के द्वारा किसी भी विचार, घटना, प्रसंग, समाचार को कुछ ही पलो में लाखों लोगों तक पहुँचाने में कामयाबी मिली हैं। भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथ, महाकाव्य को पढ़ना जैसे दुर्लभ था लेकिन इन ग्रंथ जैसे- रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवत गीता, पंचतंत्र, वेद, उपनिषद इन पर धारावाहिक, फिल्में बन रही है। इन धारावाहिक, फिल्मों को लोग पसंद कर रहे है। यही कारण है कि लोगों में साहित्य के प्रति रुचि जागृत हुई है। हमारे पवित्र ग्रंथों के विचार, भारतीय संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हमारी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, नैतिकता का केवल देश में ही नहि अपितु विदेशों में भी प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। सोशल मीडिया के द्वारा साहित्य के विभिन्न विधाओं का लोगों को ज्ञान मिल रहा है। मीडिया ने साहित्य के प्रसार के लिए एक साहित्यिक मंच प्रदान किया है। जिन ग्रंथों को हम आसानी से प्राप्त नहीं कर पाते थे उन ग्रंथ, पुस्तकों को गूगल, ई-बुक के माध्यम से प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध हुई है। जिन ग्रंथों का हाल ही में प्रकाशन हुआ है उन्हें प्राप्त करने के लिए समय लगता था लेकिन इस प्रौद्योगिकी के कारण यह समस्या दूर हुई है। पुनर्जागरण से लेकर डिजिटलीकरण के युग में साहित्य का उद्देश्य, विचार, संदेश लोगों तक पहुँचाने में मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान हैं ।

आज सोशल मीडिया के द्वारा आभासी पटल पर अनेक विद्वानों को आमंत्रित करके किसी एक पुस्तक पर चर्चा हो रही है।पुस्तकों के विभिन्न तत्वों पर चर्चा करने के लिए श्रृंखलाओं का आयोजन हो रहा है वह साहित्य और साहित्यकार के लिए अच्छी और गौरव की बात है। जब किसी ग्रंथ, पुस्तक को पाठकों द्वारा पढ़ा और समालोचित किया जाता है तब उस पुस्तक का स्तर ऊँचा हो जाता है। सोशल मीडिया ने समीक्षा या समालोचन की प्रवृत्ति को बढ़ावा देकर उसे अगले स्तर पर लाया है। नए लेखकों को लेखन की प्रेरणा सोशल मीडिया के किसी पोस्ट, विचारों से मिलना अब स्वाभाविक बन गया है। आज फेसबुक, ट्विटर या गूगल पर ब्लॉग लेखन के लिये इन नव लेखकों को किसी की अनुमती, स्वीकृति लेने की आवश्यकता नहीं रही। यह साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कर रहे हैं। इसके माध्यम से यह नव लेखक अर्थार्जन भी

कर रहे हैं। लेकिन इस आलेख के माध्यम से इसके दूसरे पक्ष पर चर्चा करना भी आवश्यक है, कि किसी भी भाषा के साहित्य के लिए नुकसान देह बात यह है की इन लेखकों को भाषा, भाषा-विज्ञान, छंद, अलंकार, साहित्य के गौरवशाली इतिहास का भी आवश्यक ज्ञान नहीं है। नए लेखक नए-नए प्रयोग कर रहे है जिसके चलते वर्तमान समय में साहित्य का एक नया लोकतंत्र बनता दिखाई दे रहा है। हालांकी इसे नए दौर के सभी लेखक ऐसे नहीं है किंतु अधिकांश लेखक लेखक इसी श्रेणी के नजर आते है। लेकिन समय के चक्र से कोई नहीं बच पाता। जिसका भी लेखन सार्थक, यथार्थ और प्रामाणिक है वह इस समयचक्र से बाहर आता है और व समाज का मार्गदर्शन करता है।

साहित्य और समाचार पत्र की अगर बात करें तो यह संबंध गहरा है। साहित्य को समृद्ध करने में समाचार पत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एक समय था की संपादक समाचार पत्र को साहित्य से दूर नहीं मानते थे। लेकिन वर्तमान समय में न पहले जैसे संपादक रहे न समाचार पत्र में साहित्य का स्थान। आज समाचार पत्र से साहित्य लुप्त हो गया है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि समाचार पत्र के संपादक के पद पर ऐसे लोग विराजमान है जिनका साहित्य से कोई सरोकार नहीं है। समाज में एक ऐसा पाठक भी है जो अपनी साहित्य की रुचि को समाचार पत्रों में छपे लेखकों का साहित्य पढ़कर अपनी साहित्य की भूख पूर्ण करते है। लेकिन अब ऐसी स्थितियाँ नहीं रही। आज अधिकतर लोगों के पास स्मार्टफोन है। इन स्मार्टफोन ने समाचार पत्र के अस्तित्व पर प्रभाव डाला है। अधिकतर लोग स्मार्टफोन में ही न्यूज अँप से समाचार पढ़ते है।

सोशल मीडिया एक अदृश्य रूप में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना, नैतिकता, मानवीय मूल्य एवं सामाजिक परिवर्तन की भूमिका निभा रहा है। मीडिया की भूमिका के कारण समाज में अपनी सभ्यता, संस्कृति, मूल्य, आदर्श को बढ़ावा मिलने लगा है। आज समस्त विश्व को आध्यात्मिक, नैतिकता, मानवीयना, सच्चरित्रता की आवश्यकता है। इन मूल्यों के प्रचार-प्रसार से ही विश्व बंधुत्व, विश्व शांती की स्थापना होती है। मीडिया द्वारा साहित्य का प्रचार-प्रसार साहित्य जगत के लिए कल्याणकारी है। सोशल मीडिया ने फेसबुक,ट्विटर, गूगल ब्लॉग, ई-बुक, ई-जरनल के माध्यम से सार्वजनिक अभिव्यक्ति और बड़े समुदाय से बिना किसी रोक-टोक से जुडने की हिम्मत दी है। यह वैज्ञानिक और तकनिकी अविष्कार व्यापक समाज के लिये उपयुक्त है।

लोकतंत्र में शुरू से ही जनमानस को शिक्षित करने, जागरूक बनाने को जवाबदेह ठहराने की अहम भूमिका मीडिया निभाता आया है। मीडिया ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, महंगाई, सामाजिक सौहार्द, सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों: जैसे- सरकार की नीतियों की समीक्षा करके भ्रष्टाचार को भी उजागर किया है। मीडिया ने अपनी ताकत से शासक, राज्यकर्ता, सरकार को पारदर्शी, संवादमुखी और जवाबदेह बनाकर अपने फैसलों, व्यवहारों और नीतियों को बदलने के लिए मजबूर किया है। परंतु वर्तमान समय में मीडिया का यह स्पष्ट, पारदर्शी रूप बदला हुआ नजर आता है यह चिंता का विषय है। आज ध्रुवीकरन और फेक न्यूज का खतरा बढ़ रहा है जिसके कारण समाज में गलतफहमी और असंतुलन अपनी सीमा पार कर रहा है। आज

मीडिया अधिकतर रूप में किसी राजकिय पक्ष या नेताओं के प्रभाव में आकर अपने मानदंड तत्व, लक्ष्य से दूर जा रहा है। एक ही न्यूज को जरूरत से ज्यादा दिखाकर समाज को गुमराह कर रहा हैं। समाज की मूल समस्याओं को दिखाने या उस पर चर्चा करने की बजाय उसे दरकीनार किया जा रहा है। यह स्थितियाँ या विचार समाज, देश और समस्त मानव जाति के विकास में बाधा बन सकते है।

अत: स्पष्ट है कि साहित्य और मीडिया वह सशक्त माध्यम है जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। समाज को संस्कारित, जागरूक और नवनिर्माण में साहित्य और मीडिया की अहम भूमिका हैं। साहित्य और मीडिया विसंगतियों, विद्रूपताओं और विरोधाभासो पर प्रहार कर परिवर्तन की क्षमता रखता है। साहित्य, समाज और मीडिया का इतना गहरा संबंध है कि किसी एक के विचलित होने से दूसरे के सामने समस्या निर्माण हो सकती है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण ही आज हमारी मुठ्ठी में दुनिया की सारी जानकारी उपलब्ध है।

संदर्भ सूची

१. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन,२०१३, पृ.५४

२. डॉ.दयाशंकर शुक्ल, साहित्यनुशीलन, गुगल पुस्तक:२०१२

३. स्वर्ण सुमन, सोशल मीडिया संपर्क क्रांतिका काळ,आज और कल

४. हरीश पपनै, रिमोट द सोशल मीडिया वॉर,२०२४

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*